RNI No.: RAJBIL/2013/54153
U.G.C. Approved No. 64524

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-5 • अंक-04 • त्रैमासिक • अक्टूबर-दिसम्बर, 2017

A Peer Reviewed Research Quarterly

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
01.	विश्वसुन्दरी विश्वेश्वरी अन्नपूर्णा	प्रो. हरिशंकर पाण्डेय	06-10
02.	स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY) का महिलाओं पर प्रभाव (अलवर-राजस्थान का एक अध्ययन)	डॉ. बिजेन्द्र प्रधान	11-15
03.	जैन धर्म में अनेकान्तवाद	मेवालाल चैतन्य	16-25
04.	आचार्य बच्चूलाल अवस्थी की 'प्रतानिनी' का स्थालीपुलाक पाकपरिशीलन	डॉ सत्यप्रकाश दुबे	26-33
05.	सम्राट अशोक का मूल्यांकन (पुरातात्त्विक आधार पर)	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	34-38
06.	तुलसी के रामचरितमानस में नारी-चिंतन	शर्मिला सोनी	39-43
07.	**Revisiting Gandhi**	**Dr Anil Dutta Mishra**	44-51
08.	**Learning and Teaching of English in Nagaur District: Problems and Solutions**	**Tripti Tripathi Dubey**	52-57
	पुस्तक समीक्षा	डॉ पुष्पा मिश्रा	58

पुस्तक समीक्षा

सामाजिक चिन्तन के विभिन्न अवयवों पर प्रकाश डालती कृति

"सामाजिक चिन्तन के स्वरूप"

समीक्षक - डॉ पुष्पा मिश्रा

सहायक आचार्य, समाज कार्य विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं (राज.)

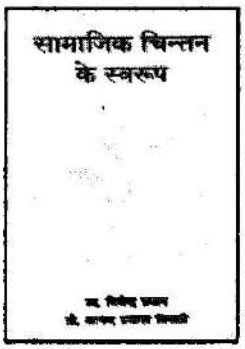

प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एवं डॉ बिजेन्द्र प्रधान द्वारा रचित पुस्तक **"सामाजिक चिन्तन के स्वरूप"** समाजोपयोगी, ज्ञानवर्धक और अत्यन्त सरल शब्दों में उद्धृत है तथा परम्परागत चिन्तन के साथ-साथ समकालीन मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया है। समीक्ष्य पुस्तक में द्वय रचनाकारों ने बुद्धिजीवी वर्गों, विद्यार्थियों, शोधकर्त्ताओं व शिक्षकों के ज्ञान संवर्धन हेतु जो प्रयास किया है वह अत्यन्त सराहनीय है।

प्रथम अध्याय में व्यक्ति के सीखने की प्रक्रिया एवं व्यवहारिक कुशलता का वर्णन किया गया है, जिसके माध्यम से पाठकों के व्यक्तित्व के एक महत्वपूर्ण पक्ष 'अधिगम' को समझने में सहायता प्राप्त होगी।

द्वितीय अध्याय के माध्यम से भारत में गरीबी की दशाओं को प्रस्तुत करते हुए स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना का गरीब परिवारों पर प्रभाव के सन्दर्भ में अध्ययन को प्रस्तुत किया है जिसे पाठकों को उक्त सरकारी परियोजना को समझने में सहायता मिलेगी।

तीसरे अध्याय में आचार्य तुलसी के महान दर्शन और दृष्टि का वर्णन है जो उन्होंने नारी जगत के उत्थान, सम्मान और कल्याण के सन्दर्भ में समाज के सामने प्रस्तुत किया।

चतुर्थ अध्याय में शिक्षित युवा वर्ग के महत्व को दर्शाते हुए समाज के उन्नयन में युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

पांचवे अध्याय में प्रस्तुत है अतिन्द्रिय चेतना के साक्षात्कार का विवरण। इस अध्याय में यह बताने का प्रयास किया है कि मनुष्य के भीतर छठी इन्द्रिय के मुख्यतः आठ अंग है जिसके द्वारा कार्य करने वाला एक आध्यात्मिक प्राणी है।

भारत एक विकासशील देश है किन्तु वर्तमान समय में स्वच्छता, पर्यावरण, रोजगार, विकास, साक्षरता आदि पर व्यापक आन्दोलन की आवश्यकता है। इसी सन्दर्भ में पुस्तक का **छठा अध्याय** एक नया आयाम स्थापित कर रहा है। आदर्श ग्राम योजना नामक इस अध्याय में लेखकद्वय द्वारा अत्यन्त श्रेष्ठ दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो आचार्य तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन का साकार रूप है।

पुस्तक के **सप्तम अध्याय** में यह संप्रेषित करने का प्रयास है कि सहभागी ग्रामीण मूल्ययन (पी.आर.ए.) के माध्यम से गांव का विकास कैसे किया जा सकता है?

अध्याय अष्टम के माध्यम से "सत्ता के विकेन्द्रीकरण सम्बन्धित जानकारी को अत्यन्त सरल शब्दों में छात्रों एवं अन्य पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है।

नौवें अध्याय के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी का समाज सुधार में योगदान का विस्तृत वर्णन करके यह बताने का प्रयास किया गया है कि समाज सुधार की प्रक्रिया में आचार्यश्री दो प्रणालियों - परम्परागत और अंतरात्मा प्रेरित प्रणाली के आधार पर समाज सुधार का कार्य किया। आचार्य श्री महान साधक एवं संत थे ही, एक उत्कृष्ट समाज सुधारक थे। उनका सुधारवादी दृष्टिकोण उनके जीवन्त व्यक्तित्व का उत्कृष्ट निदर्शन है।

दशम अध्याय के माध्यम से आधुनिक शिक्षा में सूचना तकनीकि का महत्व समझाने का प्रयास किया गया है। इनके अनुसार शैक्षिक सूचना तकनीकी के अन्तर्गत पढ़ने एवं सुनने की अपेक्षा प्रोजक्टर, टीवी., स्लाइड, टैप रिकार्डर, कम्प्यूटर, इन्टरनेट द्वारा प्रदर्शित किया जाता है जो सहज एवं प्रभावी होता है। यहां दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में इसका लाभ भी बताया गया है।

ग्यारहवें अध्याय में समाज सेवा, विज्ञान, सेना, प्रशासन, राजनीति व्यवसाय, शिक्षा इत्यादि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान, महिलाओं में आत्मविश्वास एवं विकास के सन्दर्भ में व्यापक स्तर पर वर्णन किया गया है।

बारहवें अध्याय में "स्वच्छता मिशन : बढ़ाएं एक कदम स्वच्छता की ओर" में स्वच्छता के महत्व एवं आवश्यकता पर अत्यन्त सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया गया है।

तेरहवें अध्याय में सभी प्रकार के प्रदूषण का विस्तृत वर्णन किया गया है।

पुस्तक के अन्तिम **अध्याय चौदह** में "संस्कृत साहित्य में महिलाओं के अधिकारों की स्थिति" का विस्तृत वर्णन किया गया है।

इस प्रकार यह पुस्तक सामाजिक मुद्दों से ओतप्रोत है। समाजोपयोगी एवं छात्रों के संज्ञान के विकास में मददगार साबित हो रहा है। इसमें सम-सामयिक पक्षों को जितनी कुशलता से लिपिबद्ध किया गया है उतना ही भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित जानकारी भी समावेशित हो रही है। अस्तु प्रस्तुत पुस्तक पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है।

कृति : सामाजिक चिन्तन के स्वरूप

लेखक : प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ बिजेन्द्र प्रधान

प्रकाशक : हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर

पृ. 132, **मूल्यः** 495/- रुपये